Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 10, Issue 7, June 2021
ISSN :- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को पुस्तकालय संबंधी ई-संसाधनों का प्रशिक्षण

पंकज सोनी
शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलोजी एण्ड मेडिकल साइन्स, मध्य प्रदेश
डॉ. अरुण मोदक
सह आचार्य,पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलोजी एण्ड मेडिकल साइन्स, मध्य प्रदेश

सारांश:-. आज सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी विकास का युग है जहां बहुत सी सुविधाएं और संसाधन ऑनलाइन उपलब्ध है। पुस्तकालय भी ऑनलाइन सुविधाएं उपलब्ध कराने लगे हैं। विश्वविद्यालयों में भी कंप्यूटर विभाग द्वारा पुस्तकालयों में कंप्यूटर प्रतिस्थापित किए गए हैं। वहां इंटरनेट की सुविधा प्रदान की गई है। डेलनेट एब्सको इत्यादि कई अन्य ई प्लेटफॉर्म उपलब्ध है। कई जगह विद्यार्थी इसका लाभ ले रहे हैं किंतु कई विद्यार्थी इसे समझ नहीं पाते कि किस प्रकार से इसका प्रयोग करते हुए अधिकाधिक ज्ञान अर्जन किया जाए। पुस्तकालय में कंप्यूटर का प्रयोग किस प्रकार किया जाए पुस्तकों को खोजने में बिना समय गवाएं इसका सहज प्रयोग किया जा सकता है तथा किस प्रकार विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ई बुक्स और ई जर्नल्स विद्यार्थियों पढ़ सकते हैं इसका प्रशिक्षण दिया जाना जरूरी है। विद्यार्थियों को इसका ज्ञान उपलब्ध कराया जाना जरूरी है। इसी विषय की महत्ता को समझते हुए इंदौर संभाग में प्रस्तुत शोध कार्य विभिन्न राजकीय और निजी विश्वविद्यालयों में संपादित किया गया।

मुख्य शब्द:-.निजी विश्वविद्यालय राजकीय विश्वविद्यालय ई संसाधन विद्यार्थी प्रशिक्षण।

परिचय:- पुस्तकालय में बैठकर ध्यान पूर्वक पुस्तकें पढ़ना एक अलग ही आनंद है। यहां जो शांति का वातावरण होता है उसमें विद्यार्थी गहन विषय को भी सरलता से समझ पाता है। पुस्तकालय के साथ ही वाचनालय की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है। इंदौर संभाग के चयनित विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती है। वहां पुस्तकालयों के लिए अच्छा भवन व कंप्यूटर की व्यवस्था भी की गई है किंतु यह देखने को मिला कि अधिकांश विद्यार्थी पारंपरिक तरीके से ही पुस्तकों को पुस्तकालय से जारी करवाते हैं और उन्हें नियत अवधि में पढ़कर पुनः लौटा देते हैं। वे ई-बुंक्स तथा ई-जर्नल्स का बहुत कम ही प्रयोग करते हैं। कंप्यूटरीकरण हो जाने के उपरांत भी आज कई जगह विद्यार्थी पुस्तकालय में भौतिक रूप से

जिस प्रकार से अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित भोजन की आवश्यकता रहती है उसी प्रकार से विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि के लिए पुस्तकालयों की भी आवश्यकता रहती है। पुस्तकालयों में पुस्तकों की उपलब्धता सहज, सरल और समयबद्ध रूप से

पुस्तकें ढूंढते हुए नजर आते हैं। वे कंप्यूटरीकृत कैटलॉग का प्रयोग नहीं जानते या नहीं करते हैं। कई जगह है यह भी देखा गया है कि पुस्तकालय कर्मी उतने कुशल नहीं होते हैं कि वे विद्यार्थियों को ई सुविधाओं के बारे में ज्यादा बता सके और उनकी जिज्ञासा शांत कर सके। उन्हें सतही ज्ञान होता है जो वे विद्यार्थियों को प्रदान कर देते हैं।

पूर्ववर्ती शोध कार्य:- मनोरंजन के कई साधन विकसित होने के बावजूद भी पुस्तकों की अपनी प्रासंगिकता है। पुस्तकों से ज्ञान वृद्धि और मनोरंजन दोनों ही संभव है। अतः पुस्तकें पढ़ने से न सिर्फ अच्छा समय व्यतीत होता है बल्कि व्यक्ति की समझ भी बढ़ती है क्योंकि पुस्तकें उसके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में बड़ा योगदान देती है।1

सुनिश्चित की जानी चाहिए तभी समस्त विद्यार्थियों को पुस्तकालय की यह सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा।2

पुस्तकालय एक शब्द हैं जो कि पुस्तक और आलय इन दो शब्दों के संगम से बना है, अतः उस स्थान जहां पर पुस्तकों का संग्रह हो,

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 10, Issue 7, June 2021
ISSN :- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

उसे पुस्तकालय कहा जाता है। पुस्तकालय उसी स्थान को कहा जा सकता है जहां पर अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध हो । ऐसा स्थान जहां अलमारियों में बंद पुस्तके हो और उन्हें कबाड़ की तरह रखा जाए, किसी के लिए वे पढ़ने के लिए उपलब्ध न हो वह पुस्तकालय नहीं है वह सिर्फ एक संग्रहालय है। पुस्तकालय की सुविधा का लाभ अधिकाधिक व्यक्तियों को मिले तभी पुस्तकालय की सार्थकता है।3

संस्थागत पुस्तकालयों का महत्व काफी अधिक है विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित पुस्तकालय इस श्रेणी में आते हैं। यहां पुस्तकों की अपार संख्या रहती है तथा उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रबंधन के माध्यम से विद्यार्थियों को सुलभ कराया जाता है। यहां साहित्य, संगीत, कला दर्शन, धर्म, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र जैसे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विषयों से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अनेकानेक पुस्तकें रहती है।4

उच्च शिक्षण संस्थाओं में क्लाउड कंप्यूटिंग का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे कि विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं शैक्षणिक कर्मचारियों से संबंधित विभिन्न जानकारी एक ही प्लेटफार्म पर उपलब्ध हो सके। उनकी पुस्तकों से संबंधित विभिन्न जानकारी, पुस्तकों की उपलब्धता एवं आवश्यकताएँ सभी क्लाउड पर यदि उपलब्ध हो, तो तत्परता के साथ उच्च श्रेणी की सेवाएं दी जा सकती है। विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से ये सभी सुविधाएं अवश्य दी जानी चाहिए। इसके लिए विशिष्ट प्रशिक्षण भी नितांत आवश्यक है जो कि पुस्तकालय कर्मियों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी दिया जाना चाहिए।5

पूर्व में कई शोध कार्य किए गए हैं किंतु यह अधिकांशतः पारंपरिक दृष्टिकोण से ही किए गए हैं। इनमें समसामयिक तकनीकी बदलावों पर विशेष कार्य नहीं किया गया है इसी को देखते हुए यह शोध कार्य निष्पादित किया गया।

शोध उद्देश्य:-शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को ई संसाधनों का प्रशिक्षण कितना संतोषप्रद है। यह स्थिति किस प्रकार की है यह जाने बगैर उसमें सुधार नहीं किया जा सकता।

शोध परिकल्पना

1.निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को ई संसाधनों के प्रशिक्षण का स्तर सार्थक रुप से संतोषप्रद नहीं है।

2.निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को ई संसाधनों के प्रशिक्षण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि :-प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत दो राजकीय तथा दो निजी विश्वविद्यालयों का चयन किया गया तथा प्रत्येक विश्वविद्यालय से विभिन्न कोर्सेज के अंतर्गत अध्ययनरत75-75 विद्यार्थियों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। विद्यार्थियों से पुस्तकालयों में ई संसाधनों के प्रयोग संबंधी दिए गए प्रशिक्षण के बारे में जानकारी साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र की गई।

शोध विश्लेषण:- एकत्र सूचनाओं व सामंको के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि निजी विश्वविद्यालयों में 19.33 विद्यार्थियों का मत है कि वहां ही ई-संसाधनों के प्रशिक्षण की उत्तम या अति उत्तम व्यवस्था है जबकि 31.33 विद्यार्थियों का मत है कि ई-संसाधनों की प्रशिक्षण व्यवस्था निम्न अथवा अति निम्न है। वही उन 49.33 विद्यार्थी इसे सामान्य समझते हैं। औसत रूप से अगर देखा जाए तो ई-संसाधनों की प्रशिक्षण व्यवस्था हेतु अधिकतम 750 में से 421 अंक विद्यार्थियों द्वारा दिए गए जो कि 56.13 है। यह दर्शाता है कि संसाधनों का प्रशिक्षण विद्यार्थियों की अपेक्षाओं के तुलना में बहुत ही कम और साधारण है

तालिका 1:निजी विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संबंधी ई-संसाधनों का प्रशिक्षण

स्तर	विद्यार्थी	भार	अंक
अति उत्तम	7	5	35
उत्तम	22	4	88
सामान्य	74	3	222
निम्न	29	2	58
अति निम्न	18	1	18
योग	150		421

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 10, Issue 7, June 2021
ISSN :- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

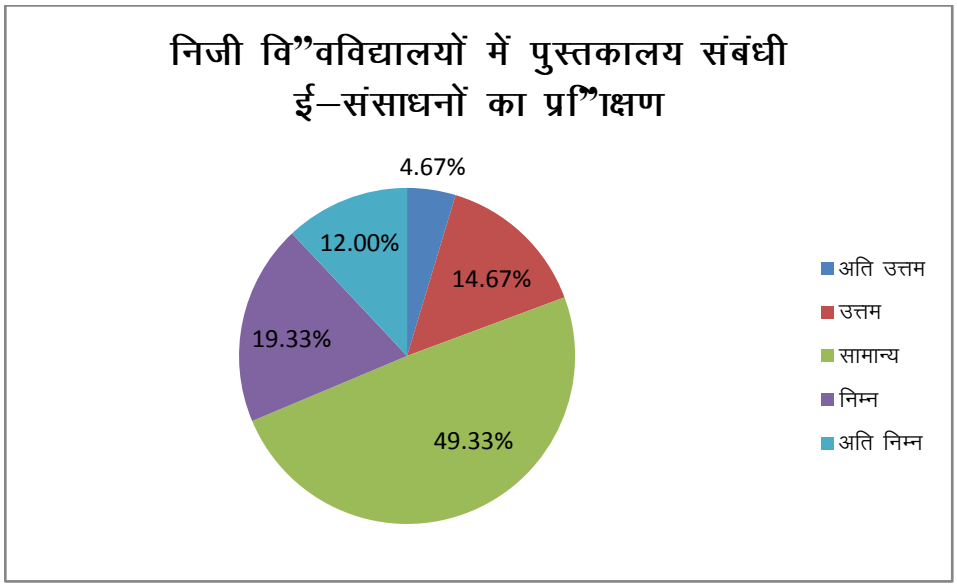

जहां तक राजकीय विश्वविद्यालयों का प्रश्न है तो वहां पर भीई संसाधनों के प्रशिक्षण की स्तिथि कुछ ज्यादा ठीक नहीं है। वहां भी मात्र 4 विद्यार्थी ही ई-संसाधनों की प्रशिक्षण व्यवस्था को उत्तम मानते हैं जबकि कोई भी विद्यार्थी इसे अति उत्तम नहीं मानता। 64 विद्यार्थी इसे निम्न या अति निम्न मानते हैं वही 32 विद्यार्थी इसे सामान्य श्रेणी में रखते हैं।औसत रूप से यदि देखा जाए तो ई-संसाधनों की प्रशिक्षण व्यवस्था हेतु 750 में से 328 अंक विद्यार्थियों द्वारा दिए गए जो कि 43.73 है। स्पष्ट है यह स्थिति काफी साधारण और अपेक्षा अनुरूप नहीं लगती हैं।

तालिका 2 राजकीय विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संबंधी ई-संसाधनों का प्रशिक्षण

स्तर	विद्यार्थी	भार	अंक
अति उत्तम	0	5	0
उत्तम	6	4	24
सामान्य	48	3	144
निम्न	64	2	128
अति निम्न	32	1	32
योग	150		328

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 10, Issue 7, June 2021
ISSN :- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

चार्ट 2

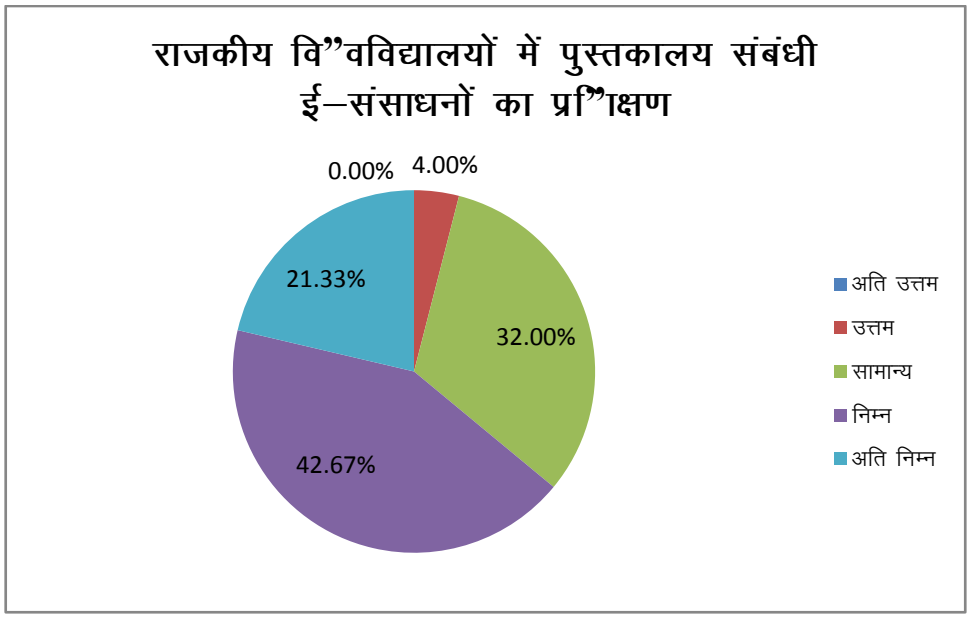

यह जानने का प्रयास किया गया कि निजी और राजकीय विश्वविद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों का औसत देखा जाए तो विद्यार्थियों के अनुसार ई-संसाधनों के प्रशिक्षण एवं व्यवस्था का स्तर औसत रूप से 49.93 हैं। क्या यह संतोषजनक कहा जा सकता है यह जानने हेतु टी परीक्षण किया गया। टीका आंकलित मान 1.32 है जो कि उसके तालिका मान 1.96 से कम है अतः ई-संसाधनों का प्रशिक्षण का स्तर सार्थक रूप से बहुत ही कम है इसे सुधारने की बड़ी भारी आवश्यकता है। इसी आधार पर प्रथम परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

तालिका 3 निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में ई संसाधनों के प्रशिक्षण की सार्थकता

विद्यार्थी	स्वातंत्र्य चर	माध्य	मानक विचलन	टी का मान	महत्ता मान
300	299	49.93	6.45	1.32	0.84

यह भी जानने का प्रयास किया गया कि ई-संसाधनों के प्रशिक्षण को लेकर निजी और राजकीय विश्वविद्यालय की स्थिति में क्या कोई सार्थक अंतर है। इसके लिए जेड परीक्षण संचालित किया गया।

$$|Z| = \frac{P1 - P2}{\sqrt{P0q0\left(\frac{1}{n1} + \frac{1}{n2}\right)}}$$

$$|Z| = \frac{0.5613 - 0.4373}{\sqrt{0.4993 X 0.5007\left(\frac{1}{150} + \frac{1}{150}\right)}} = 2.15$$

जेड का आंकलित समान 2.15 है जो कि उसके तालिका मान 1.96 से अधिक है अतः कहा जा सकता है कि निजी विश्वविद्यालयों में राजकीय विश्वविद्यालयों की अपेक्षा ई-संसाधनों के प्रशिक्षण का स्तर सार्थक रूप से बेहतर है।इसी आधार पर द्वितीय परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि पुस्तकालय संबंधी ई-संसाधनों की प्रशिक्षण व्यवस्था निजी विश्वविद्यालयों में राजकीय विश्वविद्यालयों की अपेक्षा बेहतर है किंतु इसे भी सार्थक रूप से अच्छा नहीं कहा जा सकता। दोनों ही प्रकार के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए ई-संसाधनों के व्यापक प्रशिक्षण की सुविधा सत्त रूप से उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसके लिए एक पृथक प्रकोष्ठ की स्थापना की जानी चाहिए। केवल नियमित पुस्तकालय कर्मियों पुस्तकालय से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को वे ई-संसाधनों का प्रशिक्षण दे पाएंगे।

संदर्भ :

1. Shores, Louis (1954) Basic reference sources, Chicago: American Library Association.

2. Dhyani, Pushpa (1990) Ed., Information science and libraries, New Delhi, Atlantica.

3. Krishna Kumar (1996) Reference services, Ed. 5, New Delhi, Vikas Publication House.

4. Sewa Singh (1997) International mannual of reference and information sources, New Delhi, Beacon Books.

5. Mehta and Doshi (2017) Way of transforming the higher education by adoption of the cloud learning management system (CLMS), *International Journal of Technology Research and Management*, Volume 4, (9).